Sarv Bhasha Trust Presented

www.sarvbhashatrust.com

SARV BHASHA BULLETIN
सर्व भाषा बुलेटिन

16 Dec. to 31 Dec. 2018

Year : 2, Issue : 6

इस अंक में ....

- आलेख 2
- विविध 3
- संपादकीय 4

बुनियाद कमाई

डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी

जवानी में बिछड़े दो दोस्त बुढ़ापे में एक खेल के मैदान में मिले। गले मिलते हुए सीढ़ियों पर फिसल गये। वहीं बैठे-बैठे एक ने पूछा, - 'तूने कितना धन कमाया है?'

'ज्यादा नहीं, बस गुजारा हो जाता है।'

'इसका मतलब जिंदगी ईमानदारी में गुजार दी। कमाने के लिये कहीं न कहीं बेईमानी की बुनियाद रखनी भी जरूरी होती है।' - पहला हँसते हुए बोला।

दोनों खड़े हुए लेकिन गिरने के कारण लंगड़ाये। यह देख पहले के सचिव ने उसे एक सोने की छड़ी थमा दी और दूसरे का बेटा उसको अपने कंधे का सहारा देकर ले चला। ♦♦

प्रेम : अनुभूति की पराकाष्ठा

आज जब कुछ लिखने का मन हुआ तो सोचा, क्यों न प्रेम पर ही कुछ लिखा जाए। वैसे भी प्रेमी प्रेमिकाओं के लिए 14 फरवरी (Valentine Day) का दिन किसी त्योहार से कम नहीं होता लेकिन आडंबर रहित प्रेम देखने को मिले तो ही इस त्योहार रूपी दिवस की सार्थक्ता होगी। फिर सोचा कि जिस तरह आज की पीढ़ी प्रेम के रूप को देखती, समझती या व्यवहार करती है क्या वही प्रेम का असली रूप है। लगा कि आज के लड़के लड़कियों का एक दूसरे के प्रति स्नेह ही उनकी समझ में प्रेम है। कहीं कहीं तो भौतिकतावादी व्यवस्थाओं से घिरे लोग ही एक दूसरे को आकर्षित करते हैं परंतु ये सब प्रेम के कारण तो नहीं होता, ये तो महज उनकी स्थूल तृष्णाओं की पूर्ति मात्र होता है, क्योंकि सरल प्रेम तो तृष्णाओं के बंधन से ही मुक्त है। फिर भी आज की पीढ़ी भौतिक प्रेम या कहें तो भावनाओं से परे दिखावटी प्रेम में आसक्ति को ही प्रेम समझ रही है।

सूफियों के रहस्यवाद और भक्ति संतों की अटूट आस्थाओं तक विस्तृत प्रेम को जब शब्दों के मायापाश में बांधना तक कठिन है तो क्या इसको महज वर्ष में एक दिन होने वाले मनोरंजन से जोड़कर देखा जा सकता है। प्रेम यानि अनुभूति की पराकाष्ठा। जहाँ धैर्य, विश्वास, भक्ति के साथ समर्पण भी आवश्यक रूप से होना चाहिए। किसी हद तक ये प्रेम रूपी आवरण हम लोगों की धारणीय क्षमता पर भी निर्भर करता है कि प्रेम को हम किस रूप में महसूस करते हैं या पाते हैं। प्रेम को कभी भी संपूर्णता में नहीं खोजना चाहिए क्योंकि किसी भावना का चरम यदि रुकता है तो प्रेम परिपूर्ण नहीं समझा जाता लेकिन हम ये नहीं कह सकते कि ये प्रेम नहीं है। प्रेम में होने पर हमारे लिए कोई और हमसे ज्यादा महत्व ले चुका होता है। हमें अपने अंदर से अपने आप को मिटाना होता है तब कहीं जाकर हम प्रेम का एहसास कर पाते हैं। ऐसा ना होने पर वो महज दिखावा भर रह जाता है। प्रेम हर रूप में, व्यापारी का व्यापार से, प्रेमी का प्रेमिका से, विद्यार्थी का पुस्तकों से ..... महसूस किया जा सकता है। आज के आधुनिक भौतिकतावादी मानसिकताओं से ग्रस्त अधिकतर लोगों के लिए प्रेम महज USE and THROUGH की नीति पर आधारित हो गया है। इसके भी कई कारण, रूप हो सकते हैं। इंसान का मन रोज नयी इच्छाओं को जन्म देता है और उन्हें वह किसी भी तरह पाने को लालायित रहता है, वहीं उन इच्छाओं को प्रेम समझने कि भूल करता है। उन इच्छाओं के मिल जाने या पूरी हो जाने पर मन नयी इच्छाओं को जन्म देता है जो उसके दिमाग पर घर कर लेती हैं। जिससे उसके हृदय में पहले पूरी हुई इच्छा कि अनुभूति तक शेष नहीं रह पाती। क्या नित नयी इच्छाओं से घिरा और

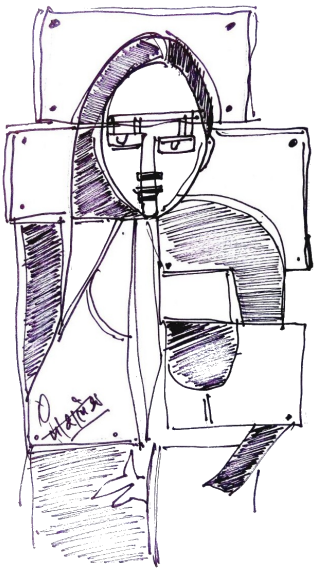

नित बदलने वाला सही मे प्रेम हो सकता है।

प्रेम अपने आप में एक ऐसी अवस्था का धोतक है जिसमें इसका आस्वादन होने पर किसी भी इंसान का इच्छाओं से विरत हो जाना स्वाभाविक है। महाकवि कालिदास कि रचनाओं में प्रेम के एहसास कि जो व्याख्या हम पाते हैं वही स्वयं कालिदास के जीवन में झाँकने पर इसके उलट प्रेम की भावना नजर आती है परंतु इन सबमें व्याप्त तो प्रेम ही है।

किसी से प्रेम पा लेना या उसको पा लेना ही प्रेम है परंतु प्रेम की सार्थकता केवल उसे पा लेने में ही नहीं है वरन इसका एहसास भी प्रेम का आलिंगन करा देता है। किसी के प्रति प्रेम में डूबने पर एक तरफ जहां हम अपनी स्वतन्त्रता का हनन सहते हैं वहीं दूसरी ओर ये प्रेम निर्वाण (मुक्ति) का भी एहसास कराता है। प्रेम में डूबने पर किसी भी व्यक्ति का जीवन दर्शन, विचार, भावनाओं को महसूस करने का तरीका परिवर्तित हो जाता है। इस अवस्था में किसी भी व्यक्ति के अहम का विनाश तक हो जाता है क्योंकि तब आप किसी के प्रति अपना सब कुछ भूलकर समर्पण भाव के लिए तैयार होते हैं। प्रेम बोध कि वह अवस्था है जब व्यक्ति सभी तृष्णाओं, वासनाओं से मुक्त होकर सम्पूर्ण अस्तित्व से न केवल अहिंसक साझेदारी का नाता बनाता है, प्रत्युत सम्पूर्ण अस्तित्व के प्रति अनुग्रहीत होता है तथा समस्त विपरीतार्थक भाव तिरोहित हो जाता है। प्रेम में डूबे व्यक्ति का जीवन इतना लचीला हो जाता है कि वो सामने वाले के अनुरूप खुद को ढालने या बदलने तक को तैयार होता है और परिवर्तन का ये क्षण ही उस व्यक्ति के जीवन में प्रेम के एहसास का सबसे खूबसूरत पल होता है।

• **अश्वनी ए कौशिक**
अधिवक्ता, दिल्ली हाई कोर्ट

मानव-विकास में अनुकरण, सुझाव और सहानुभूति की भूमिका

• सविता चड्ढा

कोई भी संस्थान/संस्था अपने कार्मिकों के विकास के प्रति चिंतनशील रहती है। पदोन्ति के पर्याप्त अवसरों की घोषणा भी सभी के लिए समरूप से की जाती है, लेकिन क्या सब स्वयं का विकास चाहते हैं। विकास है क्या? यहाँ हम विकास को दो अर्थों में लेते है - स्वयं का विकास और दूसरों का विकास। मैं यह मानती हूँ कि जब तक मनुष्य स्वयं न चाहे कोई उसका विकास नहीं कर सकता। जब मानव स्वयं अपना विकास चाहता है तो अनुकरण, सुझाव और सहानुभूति मनुष्य के विकास में अपनी तरह से विशेष भूमिका निभा जाते हैं।

हम जानते हैं कि मनुष्य में अन्य सब जीवों की तुलना में सीखनें की क्षमता सबसे अधिक होती है। सृष्टिकर्ता की सर्वोत्तम रचना है मनुष्य। मन और श्रेष्ठ इच्छाओं से युक्त मन ही मनुष्य है। मनुष्य का विकास एक परस्पर प्रक्रिया है। एक बंद कमरे में किसी को बिठाकर उसके विकास की बात नहीं की जा सकती। समाज तथा व्यक्ति के बीच विद्यमान संबंध ही उसके विकास के आधार बन सकते हैं। समाज का प्रभाव व्यक्ति पर और व्यक्ति के व्यवहार का प्रभाव समाज पर अवश्य पड़ेगा। समाज में रहकर पारस्परिक अंतः क्रियाएँ केवल मानवीय आवश्यवकताओं की पूर्ति तक ही सीमित नहीं रहती परंतु इनका प्रभाव व्यक्ति के विचारों, भावनाओं उसकी आदतों पर भी पड़ता है। आटो क्लीईनबर्ग (व्जजव ज्ञसपदमइमतह) ने इसे अपने शब्दों में व्यक्त करते हुए कहा है, ''मनुष्य जीवन से मृत्यु तक अनेक व्यक्तियों से घिरा रहता है, उन व्यक्तियों का घेरा एक महत्तवपूर्ण पर्यावरण बन जाता है और यही पर्यावरण उसके जीवन के क्रियाकलापों को प्रभावित करता है।'' - उनका मत है कि व्यक्ति पर अन्य व्यक्तियों का पड़ने वाला प्रभाव का अध्ययन ही क्रियाकलापों का वैज्ञानिक अध्ययन है। यदि हम जटिलताओं की तलाश में और मानव विकास विषयक जानकारियों के लिए भूतकाल के गर्भ में चले जाएगें तो किसी निर्णय तक पहुँचना कठिन होगा। हम सीधे-सीधे अनुकरण, सुझाव और सहानूभूति की ओर चलते हैं -

अनुकरण - सीधी बोली में अनुकरण का अर्थ है नकल करना। दूसरों के व्यवहार या क्रिया की नकल ही अनुकरण है। अनुकरण की प्रक्रिया का एक उदाहरण देना चाहती हूँ। आपमें से ८० प्रतिशत मेरी इस बात से अवश्य सहमत होगें। दादा-दादी को चश्मा पहनते देख छोटे बच्चे अवश्य चश्मा पहनते हैं। उन्हें उसकी जरूरत नहीं होती, उन्हें चश्में को पहनने का लाभ भी पता नहीं होता लेकिन वे अनुकरण करते है बूढ़ों का। पिता को अखबार पढ़ते देख बच्चा भी अ खबार खोलता है और वैसा ही अभिनय करता है। टीचर को छड़ी से बच्चों को ध मकाते देख विद्यार्थी घर आकर उसका अनुकरण करता है। यहाँ यह उल्लेख करना जरूरी है कि अनुकरण अथवा नकल से तब तक कुछ उपलब्ध नहीं किया जा सकता जब तक उसका सतत अभ्यास न किया जाए।

• हम जानते है अनुकरण में मूल प्रवृर्ति नहीं होती। अनुकरण हमें बाहरी और दूसरों के व्यवहार से प्राप्त होता है। अनुकरण जानबूझ कर किया जाता है और जब अनुकरण कर रहे होते हैं तो हमें पता होता है इसका परिणाम क्या होगा।

• मूल प्रवृर्ति अनुकरण से बिल्कुल अलग होती है। ये मनुष्यों के भीतर विद्यमान होती है जिसे बाहर निकाला जा सकता है। विकास की और अग्रसर करने वाली मूल प्रवृत्ति का अनुकरण लाभप्रद होता है।

अनुकरण कई प्रकार का हो सकता है -

• सहानुभूति अनुकरण - किसी को दुखी या सुखी देखकर स्वयं को भी उसमें सम्मिलित कर वैसा आचरण सहानुभूति अनुकरण का उदाहरण है।

• अन्य के विचारों से उत्साहित होकर अनुकरण - स्टेज पर संगीतमय कार्यक्रम देखकर जैसे मनुष्य के पाँव थिरकने लगते हैं। किसी को गाते हुए देखकर आत्म विभोर होकर हम अनुकरण करने लगते हैं। एक जीवंत उदाहरण है - जब डीजे कार्यक्रम या धार्मिक अनुष्ठान के अतर्गत संगीत कार्यक्रम होते है तो लोग उसका अनुसरण करते है लेकिन ऐसे अनुकरण विकास में तभी सहायक हो सकते है जब अभ्यास किया जाता रहे। जब हम किसी का अनुकरण करते है तो अप्रत्येक्ष रूप से हम कहीं न कहीं इस प्रक्रिया के प्रति सम्मोहित होते हैं तभी हम उसका अनुसरण करते है। यह अनुसरण सभी प्रवृत्तियों प्रक्रियाओं के प्रति यदि हमें जागरूक हो और सतत अभ्यास करें तो अनुसरण की प्रक्रिया हमारे विकास में सहायक हो सकती है। यह अनुसरण सभी प्रवृत्तियों प्रक्रियाओं के प्रति यदि हमें जागरूक हो और सतत अभ्यास करें तो अनुसरण की प्रक्रिया हमारे विकास में सहायक हो सकती है।

सुझाव - परिभाषा : दूसरे व्यक्ति द्वारा दिए गए विचार या प्रस्ताव सुझाव है और इसे स्वीवकार करने और मानने की प्रक्रिया को सुझाव पालन कहा जा सकता है। सुझाव के भी दो पक्ष हैं - सुझाव को किसी प्रस्ताव या विचार के रूप में प्रस्तुत करना है और दूसरा पक्ष उस सुझाव या विचार को छानबीन के बिना स्वीकार कर लेना। हम जिन पर विश्वास करते हैं जिनका सम्मान करते हैं, जिन पर हमारी अटूट आस्था होती है और जिन्हें हम अपना शुभचिंतक मानते हैं यदि उनके द्वारा व्यक्त विचार, प्रस्ताव उचित आधार के बिना भी विश्वास के साथ स्वीकार कर लिया जाए तो मनुष्य अपने विकास को गति दे सकता है। श्री किम्बवल यंग ने सुझाव के लिए लिखा है, ''सुझाव शब्दों, चित्रों या ऐसे ही अन्य किसी माध्यम द्वारा किए गए प्रतीक संचार का ऐसा स्वरूप है जिसका उदेश्य उस प्रतीक को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करना होता है।''

इस कथन के अनुसार सुझाव को एक निष्क्रिय ग्रहण-प्रकिया माना गया है परंतु ध्यान से देखा जाए तो सुझाव निष्क्रिय क्रिया मात्र नहीं है। सच्चाई यह है कि सुझाव या विचार प्रस्तुत करने वाला अपने सुझाव इस ढंग से प्रस्तुत करता है कि सुझाव ग्रहण करने वाले के मस्तिश्क पर उसका गहरा प्रभाव पड़ता है जिसके आधार पर सभी विरोधी विचार दब जाते हैं और वह प्रस्तुत प्रस्ताव को सच मान कर अच्छाई-बुराई की छानबीन किए बिना उसे स्वीकार कर लेता है। यह प्रक्रिया केवल वही मनुष्य अपनाते हैं जिन्हें विकास करना होता है और प्रगति जिनकी इच्छा में बनी रहती है। प्रस्तुत प्रस्ताव या सुझाव में अंतर्निहित उदेश्य यह होता है उसे स्वीकार करने की दिशा में दूसरे पक्ष को प्रेरित किया जा सके। किसी संगठन या व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव या सुझाव आकर्षक हों तो वे मनुष्यों को इन्हें स्वीकारने के लिए प्रोत्सासहित कर सकते हैं।

• सुझाव एक मनुष्य से अनेक मनुष्यों या कुछ मनुष्यों तक संचारित करने की विधि है। कुछ लोगों का तो मत है कि अनुकरण की भाँति सुझाव की प्रक्रिया के बिना सामाजिक जीवन का विकास व निरंतरता बाधा प्राप्त कर सकती है। सुझावों को सामूहिक रूप से अपनाकर हम विकास की ओर समग्रता के साथ अग्रसर होते हैं क्योंकि सुझाव सामाजिक एकता को बनाए रखते हैं और सुझाव नए विचारों को फैलाने का महत्तवपूर्ण साधन है। सुझाव सामाजिक नियंत्रण का साधन है। यह शिक्षा के रूप में महत्त्वपूर्ण कारक है। व्यापार-व्यवसाय व विकास और संकट की परिस्थितियों में सुझाव आशीर्वाद बन जाता है।

''दूसरे के स्थान पर अपने को समझने और जिस परिस्थिति में वह जैसा अनुभव कर रहा है, वैसा अनुभव करने की क्षमता ही सहानुभूति है।' सहानुभूति के बिना हमारा जीवन रेगिस्तान के समान शुष्क तथा नीरस हो जाता है। सहानुभूति के शब्द हमारे दुख पर मरहम का काम करते हैं कि हमारे कष्ट कम होते प्रतीत होते हैं और हमें आगे बढ़ने में सहायता प्रदान करते हैं। मानव विकास में मुझे सहानुभूति भी एक अनिवार्य तत्त्व महसूस होता है। किसी निर्णय तक पहुँचने के लिए दूसरों (जिनका विकास किया जाना है) के प्रति सहानुभूति दर्शाकर उसे विकास की ओर अग्रसर किया जा सकता है, सहानुभूति न पढ़ने वालों को पढ़ने के लिए प्रोत्सासहित करती है।

• चिंता और दुख में डूबे व्यक्ति को सहानुभूति के दो शब्द जीवन के प्रति सजगता प्रदान ही नहीं करते उसके भीतर की निष्क्रियता को भी समाप्त कर देती है।

• सहानुभूति की भावना से प्रेरित होकर व्यक्ति सहानुभूति दर्शाने वाले व्यक्ति के लिए हर प्रकार का त्याग करने को तत्पर हो जाता है। सहानुभूति जीवन से निराशा को दूर भगाती है और मृत आशय वाले मनुष्यों में जीवित रहकर आगे बढ़ने को प्रेरक शक्ति प्रदान करती है।

मैंने यह महसूस किया है कि बहुत कम मनुष्यों में आगे बढ़ने और विकास की संभावनाएँ होती हैं उनमें ये आशा जगाई जा सके इसके लिए अनुकरण, सुझाव व सहानुभूति महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। अंत में एक बात कहकर अपनी बात समाप्त करती हूँ कि जो स्वयं अपना विकास नहीं चाहता, उनका विकास करना कठिन अवश्य है पर असंभव नहीं। ऐसे महानुभावों के लिए अनुकरण, सुझाव और सहानुभूति कक्षों की संकल्पपना भी निरर्थक नहीं।

संपर्क - ८६६, रानी बाग, दिल्ली-११००३४

डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय की दो पुस्तकों का लोकार्पण

दिनांक 16 दिसम्बर (रविवार) को वरिष्ठ कथाकार एवं प्रख्यात कवि प्रो. रामदरश मिश्र के निवास (वाणी विहार, उत्तम नगर, नई दिल्ली) पर उनके ही कर कमलों से 'शहरनामा गोरखपुर' के संपादक व श्रेष्ठ साहित्यकार डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय के हर्फ़ पब्लिकेशन नई दिल्ली से सद्यः प्रकाशित दो ग्रंथों - 'सृजन, चिंतन और अनुशीलन' (निबंध संग्रह) एवं 'अलाव के आस-पास' (काव्य संग्रह) का लोकार्पण हुआ।

'सृजन, चिंतन और अनुशीलन' (निबंध संग्रह) एवं 'अलाव के आस-पास' (काव्य संग्रह) का लोकार्पण के अवसर पर हर्फ़ पब्लिकेशन के निदेशक व प्रकाशक श्री जलज कुमार अनुपम, युवा रचनाकार श्री केशव मोहन पाण्डेय एवं डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय के कनिष्ठ पुत्र श्री विवेक पाण्डेय उपस्थित थे। डॉ. मिश्र ने डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय के गद्य-ग्रंथ में संकलित कुछ लेखों एवं उनकी ग्राम्य जीवन से जुड़ी हुई कतिपय कविताओं की सराहना की तथा डॉ. पाण्डेय के अपने प्रति स्नेह-सम्मान के प्रति आभार प्रकट किया। इस अवसर पर डॉ. पाण्डेय ने अपनी कुछ चुनी हुई कविता-ओं का पाठ किया और प्रो. मिश्र के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। ग्रंथों के प्रकाशक श्री जलज कुमार अनुपम ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

♦♦

में निर्मल आं

यशपाल निर्मल

अखनूर
जम्मू

भाषा : डोगरी
(कविता)

अतीत गी दिक्खनां
इक्कले बैठे दे
किन्ना किन्ना चिर
जिसलै
में
शुरु कीती ही
जीवन जात्तरा
उसलै बी
इक्कला हा
हून बी इक्कला आं
ठोकरां खन्नां
डिग्गना
संभलना
पह्ी चलन लगी पौन्नां
एह् दुनिया
कुसै गी
अपने ढंगै कन्नै
कुत्थै
जीन दिंदी ऐ?
में
कविताएं च
रुज्झे दा
जिंदगी दी
बुझारत
बुज्झने दा
करै करनां
बेकार जतन
मेरा
वर्तमान
अतीत दी गै
देन ऐ
भविक्ख बी
अतीत दी गै
देन होग
अप्रतक्ख रूपै च
इसकरी
में
अपने अतीत दा
कर्जाऊ आं
एह् ब्हा
पानी
बूस्टे
पत्थर
प्हाड़
कुप्पड़
सूरज
चन्न
तारे
नदियां नाले
धरत शमान
सब्बै
गवाह न मेरे
में
निर्मल आं।

♦♦

केशव मोहन पाण्डेय

सही ही कहा गया है कि भाषा एक संस्कृति है। किसी भी भाषा में भावनाएँ, विचार और सदियों की जीवन-पद्धति समाहित होती है। भाषा परंपराओं और संस्कृति से व्यक्ति को जोड़े रखती है। भाषा से व्यक्ति के समाज, राष्ट्र और संस्कृति की पहचान होती है। एक भाषा के नष्ट होने का अर्थ एक संस्कृति, विचारधारा और जीवन-पद्धति का मर जाना होता है। भाषा कोई भी हो, अपने आप में उसकी अहम पहचान होती है। वैज्ञानिक इस बात को स्पष्टतः मानते हैं कि व्यक्ति के संप्रेषण की भाषा वही होनी चाहिए, जिस भाषा में वह सोचता है। हमें कई बार सुनने-पढ़ने को मिलता है कि भाषा संस्कृति का अधिष्ठान है। संस्कृति भाषा पर टिकी हुई है। मानवीय अध्ययनों में संस्कृति का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। मानव और संस्कृति में विद्वान लेखकों ने सांस्कृतिक नेतृत्व के सर्वमान्य तथ्यों को अनेक ग्रंथों में, अनेक पृष्ठभूमियों में प्रस्तुत करने का यत्न किया है। भाषा से परे किसी को नहीं माना जाता है। कह सकते हैं कि अगर कोई भाषा से परे है, तो वह या तो मृत है या गूंगा। वह कभी संस्कारित और सहृदय नहीं कहा जा सकता।

अपने लेख 'भाषा में समाया ब्राह्मणवाद' में रामजी राय लिखते हैं, – "भाषाओं का जनतंत्र जनता के जनतंत्र से सीधे जुड़ा हुआ है।" इस जुड़ाव का मानवता के लिए अहम महत्त्व है। यह भी सत्य है कि कई बार एक-दूसरे की संस्कृति को समझने में भाषा की भिन्नता एक बाधा होती है और कई बार भाषाई समझ ही लोगों को करीब लाने का काम करती है। गत वर्षों में हिंदी तथा भारतीय भाषाओं का अध्ययन करने आए अमेरिकी छात्रों में से स्कहन्सिन के छोटे से शहर अरगाइल की एलिजाबेथ बिगेलो ने कहा था, "भाषा किसी भी संस्कृति को समझने में खिड़की की तरह होती है क्योंकि भाषा और सामाजिक संवाद में निश्चित तौर पर जुड़ाव होता है। हिंदी में तो यह सब और साफ दिखता है। यहाँ किसी को संबोधित करने में औपचारिकता बरती जाएगी तो 'आप' शब्द का इस्तेमाल होगा जबकि अनौपचारिक होने पर 'तुम'। इससे यहाँ और अंग्रेजी भाषी मुल्कों की संस्कृतियों में फर्क समझ में आता है, जहाँ संबोधन में हमेशा 'तुम' शब्द का प्रयोग होता है, चाहे कोई बड़ा हो, बच्चा हो, परिवार का हो या अजनबी।"

हमारे मूल्य और मानदंड भाषा में पाए जाते हैं। जैसे ही कभी संस्कृति में बदलाव होता है तब हमारी भाषा भी बदल जाती है। एक लेख 'भारतीय परिवेश में भाषा, समाज, संस्कृति और शिक्षा का अन्तःसंबंध' के लेखकद्वय कांबले प्रकाश अभिमन्यु और सुमेध हाडके लिखते हैं कि "समाज और संस्कृति की बात की जाए तो समाज और संस्कृति में ऐसा गहरा संबंध है जैसे चोली और दामन का होता है। उनका एक दूसरे के बिना संपूर्ण होना कभी संभव नहीं है। जैसे कोई व्यक्ति समाज के बिना नहीं रह सकता, उसी प्रकार वह समाज के सांस्कृतिक नियमों से परिपूर्ण हुए बिना संपूर्ण नहीं माना जाएगा।" इन बातों के आधार पर निर्णयतः कहा जा सकता है कि समाज और संस्कृति मानव-जीवन के अन्य घटकों से अधिक महत्वपूर्ण भी हैं, इनके बगैर भाषा और शिक्षा पर विचार करना भी कठिन होगा। ♦♦

रीता मिश्रा

मुझे कुछ कहना है ....

आज समाज में कई दुविधाओं के रहते कुछ प्रश्न आ खड़े हो गए हैं। हमारी मूर्खताओं और गलतियों के कारण समाज में अराजकता फैली है और सबसे बड़ी समस्या आज की शिक्षा बन गई है। जहाँ हम शिक्षा को एकता और जागृति का कारण मानते हैं, वहीं आजकल शिक्षा प्राप्त कर लोगों में विशिष्ट होने की भावना जन्म ले रही है। शिक्षा यों तो ऊँचे-नीचे, सभी वर्गों को पिरोने का काम करती है, परंतु आज शिक्षितों व अशिक्षितों में ऐसी दीवार बन गई है, जिसका टूटना असंभव-सा लगता है। आजकल ऐसी स्त्रियाँ भी मिल जाएँगी जो साक्षर हैं, सरल और कोमल भी हैं, परंतु जो अक्षरज्ञान तक सीमित हैं, विवेकशक्ति उनमें नाम मात्र की भी नहीं। उनके कोमल हृदय पर अच्छे संस्कारों की छाप और अच्छे संस्कारों की नींव की आवश्यकता है। आजकल शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा रखने वाली महिलाओं के दो प्रकार के ध्येय हैं – पुरुष की तरह स्वतंत्र जीवन-निर्वाह करना या अपने को विदुषी और शिक्षिता प्रमाणित करना ताकि अपने धन और विद्या के बल पर ऐसा पति पा सकें जो विवाह के बाद सभी सामाजिक सुविधाएँ जुटा सके ताकि भावी जीवन में स्वयं का कोई कर्तव्य न रहे। परंतु इन सभी विषयों से अधिक आवश्यक है अपने देश के बच्चों का विकास और अशिक्षित स्त्रियों का विकास ताकि वे अपने बच्चों का भविष्य बनाना सीखें, दुनिया को जानें, स्वावलंबी बनें। ♦♦

अशोक लव की दो कविता

लहरों के कामना दीप

लहरों को सौंप दिया है कामना दीप
जहाँ चाहे ले जाएँ
उन्ही पर आश्रित हैं अब तो
कामना दीप का अस्तित्व

हथेलियों में रख कर सौंपा था
लहरों को कामना दीप
बहाकर ले जाने के लिए अपने संग
मंद मंद हिचकोले खाता
बढ़ता जाता है लहरों के संग

कामना दीप का भविष्य होता है
लहरों के हाथ
जरा सा प्रवाह तेज होते ही
डोलने लगता है
और अंततः समां जाता है लहरों में

कामना दीप सा समा जाना चाहता हूँ
सदा सदा के लिए
तुम्हारे ह्रदय की स्नेहिल लहरों में

♦♦

तुम्हारे आगमन के पश्चात

यूँ ही रख दिया
चांदनी बयार ने अपना हाथ
अमलतास के कन्धों पर
पीले फूलों से भर गया अमलतास
महक उठा चन्दन-सा
कल तक उदास था
आज खिल उठा अमलतास

अँधेरे जंगलों में
रूखा-सूखा खड़ा था बांस
बढ़े दो हाथ
तराशा-संवारा
अधरों से लगाया
बज उठे बांस

पुस्तकों के पृष्ठों में
बंदी थे शब्द
कोमल उँगलियों ने खोल दी जंजीरें
पुस्तकों से निकल आये शब्द
अधरों ने गुनगुनाये
गीत बन गूँज उठे शब्द

♦♦